AMAR UJALA MY CITY PAGE 7

अध्ययन | लविवि और भारत लैब ने युवाओं के 'पहले वेतन' पर सर्वेक्षण की जारी की रिपोर्ट

जब दिल किया तब बचत... सिद्धांत पर 76% युवा

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। मेहनत की पहली कमाई को लेकर युवाओं के मन में तमाम सवाल होते हैं। कहां खर्च करना है? कितना खर्च करना है? कितना बचाना है? इन सवालों का जवाब तलाशा है लखनऊ विश्वविद्यालय और भारत लैब ने। दोनों संस्थाओं ने युवाओं के पहले वेतन पर अध्ययन कर एक रिपोर्ट प्रकाशित है। इसमें कई रोचक तथ्य सामने आए हैं।

कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय और रेडीफ्यूजन भारत लैब के संस्थापक संदीप गोयल ने बृहस्पतिवार को इस रिपोर्ट का विमोचन किया। कुलपति ने बताया कि भारत लैब की रिपोर्ट लविवि के एमबीए के छात्रों की ओर से टियर-3 कस्बों के युवाओं पर आधारित एक व्यापक सर्वेक्षण पर आधारित है।

रिपोर्ट जारी करते आईआईएम तिरुचिरापल्ली के प्रो. पीके सिंह, प्रो. संगीता साहू, कुलपति आलोक राय, डॉ. संदीप गोयल व वितिका विक्रान्त देवरस। -संवाद

कुल दो हजार युवाओं पर सर्वे हुआ। सर्वेक्षण रिपोर्ट से पता चला कि आज के युवा बचत के लिए बंधन में नहीं रहना चाहते हैं। उन्हें पारंपरिक निवेश के तरीकों की जगह म्यूचुअल फंड में एसआईपी (सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) जैसे तरीके पसंद आ रहे हैं। रिपोर्ट में सामने आया है कि 76% युवा "जब संभव हो तब निवेश" का सिद्धांत अपना रहे हैं।

पहला वेतन व उसका उपयोग

- 38.8% युवाओं ने अपने पहले वेतन से परिवार को उपहार दिए। इसमें उनमें कृतज्ञता प्रमुख भावना रही।
- 24.5% ने पहले वेतन का बचत में डाला, जो उनकी आर्थिक दूरदर्शिता का संकेत।
- 20.4% ने धार्मिक या सामाजिक कार्यों में दान भी दिया। यह युवा पीढ़ी की सामाजिक चेतना को दर्शाता है।
- 88.5% महिलाओं ने अपने पहले वेतन को व्यक्तिगत स्वतंत्रता का प्रतीक बताया।
- 44.6% युवाओं ने अपने वेतन की जानकारी सबसे पहले अपनी मां को दी।

रिपोर्ट में नीति और शिक्षा क्षेत्र के लिए सुझाव

- फिनटेक कंपनियों को युवाओं को ध्यान रखते हुए सरल और लक्ष्य-आधारित निवेश विकल्प शुरू करने चाहिए।
- नीति-निर्माताओं को भारत के छोटे शहरों में न्यूनतम वेतन ढांचे पर पुनर्विचार करना चाहिए।
- मार्केटिंग रणनीतियों में पारिवारिक और सांस्कृतिक मूल्यों को शामिल करना चाहिए।
- विश्वविद्यालयों को विशेष रूप से छात्राओं के लिए वित्तीय साक्षरता को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना चाहिए।

NBT PAGE 4

खुशी | लखनऊ यूनिवर्सिटी और भारत लैब ने 'पहली सैलरी' पर किया अध्ययन

पहली सैलरी सिर्फ पैसा नहीं इमोशन है

NBT न्यूज, लखनऊ:

किशोर कुमार का गीत 'दिन है सुहाना आज पहली तारीख है' कभी रीमिक्स की तरह तो कभी किसी विज्ञापन में अब भी सुनने को मिल जाता है। लखनऊ यूनिवर्सिटी ने भारत लैब के साथ मिलकर देश में युवाओं की पहली सैलरी को लेकर शोध किया है। सर्वे के नतीजों ने इस गीत की याद फिर से दिला दी है। गुरुवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में माय फर्स्ट सैलरी शीर्षक वाली नई रिपोर्ट का विमोचन हुआ। रिपोर्ट के मुताबिक भारत के युवाओं के लिए पहली सैलरी केवल आर्थिक नहीं बल्कि इमोशनल और कल्चरल यात्रा है। यह आजादी, पारिवारिक मूल्यों और आत्मसम्मान का प्रतीक है। यह रिपोर्ट एलयू के कुलपति प्रो. आलोकुमार राय ने रेडिफ्यूजन के चेयरमैन और एफएमएस, दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र संदीप गोयल, वीतिका विक्रांत देवरस और प्रो. पीके सिंह के साथ मिलकर पेश की। यह शोध लखनऊ यूनिवर्सिटी मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (LUMBA) और आसपास के टियर 3 कस्बों के युवाओं पर आधारित सर्वेक्षण पर आधारित है। वीसी प्रो आलोक कुमार राय ने कहा कि यह रिपोर्ट केवल अर्थशास्त्रियों के लिए नहीं, बल्कि माता-पिता, नीति-निर्माताओं और हर युवा के लिए है जो आर्थिक आजादी की दहलीज पर खड़ा है।

पारंपरिक की बजाय व्यक्तिगत निवेश पसंद

खुलकर हुआ है कि 76% युवा अब SIP की बजाए पैसे बचाकर खुद के लिए कुछ करना चाहते हैं। जैसे कोई गोवा में हॉलिडे मनाने के लिए पैसे जोड़ रहा है तो कोई ड्रीम बाइक के लिए।

सुझाव: फिनटेक कंपनियों को सरल और लक्ष्य-आधारित निवेश विकल्प शुरू करने चाहिए। नीति-निर्माताओं को छोटे शहरों में न्यूनतम वेतन ढांचे पर दोबारा विचार करना होगा। मार्केटिंग रणनीतियों में पारिवारिक और सांस्कृतिक मूल्यों को शामिल करना चाहिए।

रिपोर्ट की मुख्य बातें

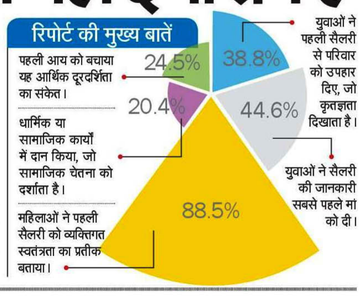

TOI PAGES 1, 8

A gift to family: How Gen Z spends its first pay

Lucknow: Receiving one's first salary is a milestone moment, filled with a mix of emotions and a sense of accomplishment. But have you ever stopped to think about how you spent your first paycheck? A recent study, 'My First Salary', conducted by Lucknow University and Bharat Lab, sheds light on this question, revealing the deeply emotional, often ceremonial, and culturally significant nature of this significant moment.

Bharat Lab, a think tank jointly launched by Rediffusion and LU, focuses on understanding consumer behaviour in India's tier 2 and 3 cities. Based on a survey of 2,125 individuals across semi-urban India, the study found that the first salary is more than just a financial milestone. For many, it's an opportunity to express gratitude and share their success with loved ones. A significant 38.8% of respondents used their first salary to buy gifts for their family, highlighting the importance of family ties and cultural values in Indian society. TNN

SALARY & SOPS

- **A striking insight from the report is the youth's preference** for flexible and personalised investment practices
- **Around 76%** of young earners now favour **'invest when you can'** model over rigid SIPs
- Many are tagging these investments with personal goals such as **"Goa 2026" or a "dream bike"**

▶ Social causes, P 8

लविवि में बीबीए बिजनेस एनालिटिक्स कोर्स मंजूर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज की ओर से शुरू किए जा रहे बीबीए बिजनेस एनालिटिक्स कोर्स को गवर्निंग बोर्ड से भी बृहस्पतिवार को मंजूरी मिल गई। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय की अध्यक्षता में हुई बैठक में इसे अनुमोदन दिया गया।

पाठ्यक्रम की संयोजक प्रो. विनीता काचर ने बताया कि विद्यार्थियों को बेहतर प्रबंधन की शिक्षा देने के लिए यह पाठ्यक्रम शुरू किया जा रहा है। इसमें 60 सीटों पर प्रवेश लिए जाएंगे। इसके लिए ऑनलाइन आवेदन विवि की वेबसाइट पर समर्थ पोर्टल के माध्यम से किए जा सकते हैं।

इसी सत्र में ले सकेंगे दाखिला 60 सीटों पर होंगे प्रवेश

यह कोर्स अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) से भी मान्यता प्राप्त कर चुका है। कोर्स की वार्षिक फीस 35 हजार रुपये होगी। यह पाठ्यक्रम व्यवसाय और प्रबंधन में मौजूदा जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। ऐसे में इसमें रोजगार मिलने की संभावनाएं अधिक होंगी। कोर्स पूरा करते-करते विद्यार्थियों के हाथ में नौकरी होगी। बैठक में सदस्यों के रूप में आईआईएम तिरुचिरापल्ली के निदेशक प्रो. पीके सिंह, वीतिका विक्रांत देवरस, डॉ. संदीप गोयल उपस्थित रहे। (संवाद)

एलयू में बीबीए बिजनेस एनालिटिक्स कोर्स मंजूर

60 सीटों पर विश्वविद्यालय में लिए जाएंगे दाखिले

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज में बीबीए बिजनेस एनालिटिक्स पाठ्यक्रम का संचालन किया जाएगा। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय की अध्यक्षता में विवि के नवीन परिसर स्थित सभागार में गुरुवार को गवर्निंग बोर्ड बैठक में मंजूरी मिली।

आईआईएम तिरुचिरापल्ली के निदेशक प्रो. पीके सिंह, वीतिका विक्रांत देवरस, डॉ. संदीप गोयल उपस्थित रहे। पाठ्यक्रम की संयोजक प्रो. विनीता ने बताया कि छात्रों को बेहतर प्रबंधन की शिक्षा देने के उद्देश्य से बीबीए बिजनेस एनालिटिक्स का प्रोग्राम शुरू किया जा रहा है। इसमें 60 सीटों पर प्रवेश लिए जाएंगे। इसके लिए ऑनलाइन आवेदन विवि की वेबसाइट पर समर्थ पोर्टल के माध्यम से किए जा सकते हैं।

यह कोर्स अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) से भी मान्यता प्राप्त कर चुका है। कोर्स का शुल्क तय हो गया है। इसकी वार्षिक फीस 35 हजार रुपये होगी।

अध्ययन | लखनऊ विश्वविद्यालय और रीडिफ्यूजन की भारत लैब ने 'मेरी पहली सैलरी' नामक नई रिपोर्ट प्रस्तुत कर आंकड़े जारी किए, 1190 पुरुष और 935 महिलाओं के जवाब से बनी रिपोर्ट

पहले वेतन से 38 फीसदी लोग परिवार के लिए उपहार खरीदते

लखनऊ, संवाददाता। पहली सैलरी मिलने पर 38.8 फीसदी लोग अपने माता-पिता, भाई-बहन, दोस्त, मार्गदर्शक या शिक्षक के लिए उपहार खरीदते हैं। 24.5 प्रतिशत व्यक्ति भविष्य के लिए उसे सुरक्षित करते हैं। यह उनकी वित्तीय साक्षरता को भी प्रदर्शित करता है। वहीं 20.4 फीसदी महिला या पुरुष सामाजिक व धार्मिक कार्यों पर व्यय करते हैं। 12.2 प्रतिशत व्यक्ति घर के लिए कोई जरूरी सामान खरीदते हैं। बिजली बिल समेत अन्य चीजों का भी खर्च उठाते हैं। इसके अलावा 4.1 फीसदी महिला या पुरुष अपनी माता के लिए ज्वेलरी और पिता के लिए वॉलेट खरीदते हैं।

यह तथ्य एलयू और रीडिफ्यूजन की ओर से प्रबंधन अध्ययन संकाय में स्थित भारत लैब की 'मेरी पहली सैलरी' नामक रिपोर्ट में सामने आए हैं। पहली सैलरी विषय पर अध्ययन के लिए लुम्बा के एमबीए समेत अन्य छात्रों ने 2125 व्यक्तियों से बात की। जिसमें 1190 पुरुष, 935 महिलाएं शामिल रहीं। रिपोर्ट को कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय, रीडिफ्यूजन के चेयरमैन डॉ. संदीप गोयल, आईआईएम तिरुचिरापल्ली के निदेशक प्रो. पीके सिंह समेत अन्य ने लांच किया।

एलयू में गुरुवार को मेरी पहली सैलरी नामक नई रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

अध्ययन से निकले तथ्य

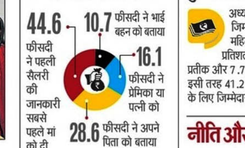

- 50 फीसदी महिलाओं ने प्रथम सैलरी का एक हिस्सा बचाया जबकि पुरुष 32.3 फीसदी रहे।
- 41.6% महिलाओं ने प्रथम सैलरी से धार्मिक व सामाजिक काम किए 27.7 फीसदी पुरुषों ने ऐसा किया

पुरुषों को जिम्मेदार, महिलाओं को स्वतंत्र बनाता पहला वेतन

अध्ययन में सामने आया है कि पहली सैलरी मिलने पर पुरुषों के भीतर जिम्मेदारी और स्वतंत्रता का अहसास जन्म लेता है। जबकि ज्यादातर महिलाएं सिर्फ स्वयं को स्वतंत्र ही महसूस करती हैं। रिपोर्ट में 88.3 प्रतिशत महिलाओं ने अपनी पहली सैलरी को व्यक्तिगत स्वतंत्रता का प्रतीक और 7.7 फीसदी ने जिम्मेदारी बताया। 3.8 प्रतिशत ने दोनों को अपनाया। इसी तरह 41.2 प्रतिशत पुरुषों के लिए पहली सैलरी स्वतंत्रता और 41.2 फीसदी के लिए जिम्मेदारी है। 17.6 प्रतिशत ने दोनों के प्रति प्रतिबद्धता दिखाई।

नीति और शिक्षा क्षेत्र के लिए सुझाव

1. फिनटेक कंपनियों को सरल और लक्ष्य आधारित निवेश विकल्प शुरू करने चाहिए।
2. नीति-निर्माताओं को भारत के छोटे शहरों में न्यूनतम वेतन ढांचे पर पुनर्विचार करना चाहिए।
3. मार्केटिंग रणनीति में पारिवारिक और सांस्कृतिक मूल्यों को शामिल करना चाहिए।
4. विश्वविद्यालय विशेष रूप से छात्राओं के लिए वित्तीय साक्षरता को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाएं।

युवाओं का सिद्धांत, जब संभव हो तब करें निवेश

डॉ. संदीप गोयल के अनुसार भारत के युवा पारंपरिक एसआईपी की बजाय लचीले और व्यक्तिगत निवेश मॉडल पसंद कर रहे हैं। 76 फीसदी युवा जब संभव हो तब निवेश के सिद्धांत पर चल रहे हैं और अपने निवेश को व्यक्तिगत लक्ष्यों जैसे गोवा 2026 या ड्रीम बाइक से जोड़ रहे हैं।

"शोध, अध्ययन में लोगों के दिलों को प्रतिबिंबित करना चाहिए। भारत लैब इस सोच का उदाहरण है। यह रिपोर्ट माता-पिता, नीति-निर्माताओं और हर उस युवा के लिए है जो आर्थिक स्वतंत्रता की दहलीज पर है। प्रो. आलोक कुमार राय, कुलपति, एलयू

24.5% saved income, 20.4% donated to social causes

▶Continued from P 1

The findings, released on Thursday, offers a compelling look into how young earners in India's Tier 2 and Tier 3 cities — collectively referred to as Bharat — experience and express the moment of receiving their first paycheck. "The report reveals that 38.8% of respondents used their first salary to buy gifts for family, emphasising a culture of gratitude. Around 24.5% saved their income, indicating increasing financial responsibility, and 20.4% donated to religious or social causes, reflecting a strong sense of community," the report said.

The report further stated that 88.5% of women saw their first income as a symbol of personal freedom, and 44.6% informed their mothers first, highlighting the emotional depth of the milestone.

"The study also delves into gender dynamics, generational shifts, and the blending of traditional and modern financial behaviour. For instance, despite rising digital literacy, one in three women still invests in gold with their first salary, maintaining a time-honoured practice," said the chairman of Rediffusion, Sandeep Goyal.

The report also highlighted a new financial culture among Bharat's Gen Z. A striking insight from the report is the youth's preference for flexible and personalised investment practices. Around 76% of young earners now favour 'invest when you can' model over rigid SIPs. Many are tagging these investments with personal goals such as "Goa 2026" or a "dream bike" — a clear shift towards emotionally driven financial planning.

"They want to save, but without being shackled. This is personal finance made personal — not passive," said Goyal.

The report captures the emotional, cultural and financial significance of receiving a first salary among young Indians — highlighting it not just as a financial transaction, but a rite of passage tied deeply to family, independence and values.

"At Lucknow University, we believe research must reflect the heartbeat of the nation. The Bharat Lab is a living testament to that belief. This report doesn't just speak to economists — it speaks to parents, policymakers, and every young adult standing at the threshold of financial independence," said LU Vice-Chancellor Prof Alok Kumar Rai.

He said the report highlights key behavioural insights on how India's young professionals relate to their first income, whether through spending, saving, or sharing. It underscores the university's commitment to research that goes beyond academia to influence policy, business, and social understanding.

JAGRAN CITY PAGE IV

44.6 प्रतिशत युवा मां को देते हैं पहले वेतन की जानकारी

लविवि व भारत लैब की 'पहले वेतन' पर किए अध्ययन की रिपोर्ट जारी

लखनऊ विश्वविद्यालय के नवीन सभागार में पहले वेतन पर अध्ययन रिपोर्ट को जारी करते कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय, प्रो. पीके सिंह, डा. संदीप गोयल, प्रो. संगीता साहू व वितिका विक्रांत देवरस। - जागरण

जागरण संवाददाता • लखनऊ : पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को मद्दी भागीदारी के बावजूद युवकों में परिवार और जिम्मेदारी का बोध अधिक है। पहला वेतन पाने वाले 44.6 प्रतिशत युवा पहली वेतन की जानकारी सबसे पहले मां को देते हैं। 38.8 प्रतिशत युवाओं में पहले वेतन से परिवार को उपहार देने और कृतज्ञता के साथ जिम्मेदारी का बोध होने का एहसास होता है। इससे इतर 88.5 प्रतिशत युवतियां अपने पहले वेतन को व्यक्तिगत स्वतंत्रता का प्रतीक मानकर आत्म निर्भर होने का एहसास करती हैं। 20.4 प्रतिशत युवा पहला वेतन पाने पर धार्मिक स्थलों पर जाते हैं।

लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.आलोक राय युवाओं की रुचि और भारत लैब द्वारा 'पहला वेतन' पर किए गए अध्ययन की रिपोर्ट जारी करने के बाद जानकारी दे रहे थे। उन्होंने 'मेरा पहला वेतन' शीर्षक से नई रिपोर्ट का विमोचन भी किया। दो हजार युवाओं पर किए गए सर्वे के आधार पर तैयार की गई रिपोर्ट के विमोचन अवसर पर रेडिफ्यूजन के चेयरमैन एवं एफएमएस संदीप गोयल, वीतिका विक्रांत देवरस और प्रो. पीके सिंह मौजूद थे।

तीन कस्बों में किया गया सर्वे

कुलपति ने बताया कि यह रिपोर्ट भारत लैब ने तैयार की है, जो लविवि और रेडिफ्यूजन का एक संयुक्त सांस्कृतिक-व्यवहारिक थिंक टैंक है। लविवि के एमबीए के विद्यार्थियों ने अलाइन के तीन कस्बों के सर्वे के बाद रिपोर्ट प्रस्तुत की। युवाओं के लिए पहला वेतन सिर्फ आर्थिक नहीं, बल्कि एक भावनात्मक व संस्कृतिक यात्रा है जो स्वतंत्रता, पारिवारिक मूल्यों और आत्मसम्मान का प्रतीक है। माना है कि शोध को राष्ट्र की धड़कनों को प्रतिबिंबित करना चाहिए।

अध्ययन रिपोर्ट पर एक नजर

- **38.8** प्रतिशत ने पहले वेतन से परिवार को उपहार दिए।
- **24.5** प्रतिशत ने पहली आय को बचाया
- **20.4** प्रतिशत ने धार्मिक या सामाजिक कार्यों में दान किया
- **76** प्रतिशत के लिए जब संभव हो तब निवेश का सिद्धांत

लवि : नए सत्र से शुरू होगा बीबीए बिजनेस एनालिटिक्स

जागरण संवाददाता • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट साइंसेज (आइएमएस) में अब नए सत्र 2025-26 से बीबीए (बीबीए) बिजनेस एनालिटिक्स (बीबीए) बिजनेस एनालिटिक्स पाठ्यक्रम की पढ़ाई भी शुरू होगी। गुरुवार को इंस्टीट्यूट के गवर्निंग बोर्ड की बैठक में सदस्यों ने इस पाठ्यक्रम को मंजूरी दी।

शुरुआ 11 मार्च से शुरू हुई बैठक में बोर्ड के अध्यक्ष कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय और कार्य सदस्य रीडिफ्यूजन, ब्रांड सल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक एवं बोर्ड के सदस्य डा. संदीप गोयल, डॉ. संगीता, मार्केटिंग और डेटा आइएचसीएल की उपाध्यक्ष वीतिका विक्रांत देवरस, भारतीय प्रबंध संस्थान (आइआइएम) विशाखापत्तनम के निदेशक प्रोफेसर पी.के सिंह, लखनऊ विश्वविद्यालय के कला और वाणिज्य संकाय के अधिष्ठाता, कुलसचिव विक्रमेंद्र, वित्त अधिकारी, आइएमएस की अोएसडी प्रोफेसर विनीता काचर, उपनिदेश डा.ज्योति चोई समिति ने बोर्डेक (विजनेस एनालिटिक्स) पाठ्यक्रम को स्वीकृति की तथा उसे मंजूरी दी तथा आज महाकुंभ अवकाश के कारण बोर्ड की गवर्निंग बोर्ड से अनुमोदित किया गया।

60 सीटों पर होंगे प्रवेश प्रोफेसर विनीता काचर ने बताया कि अभी तक इंस्टीट्यूट में बीबीए कोर पाठ्यक्रम संचालित है। अब बीबीए बिजनेस एनालिटिक्स भी शुरू होगा। इस कोर्स में अलाइन अकोला बिंद जा सकते हैं। 60 सीटें पर प्रवेश परीक्षा के आधार पर दाखिले होंगे। इस कोर्स में डेटा साइंस, पाइथन लैंग्वेज, बेस एनालिटिक्स से संबंध विषयों के पढ़ाई विभिन्न तरह के पाठ्यक्रमों के जरिये भी पढ़ाया जाएगा।

वीरएलएस सहित कई कोर्स का परीक्षा कार्यक्रम जारी

उमा • लखनऊ : लवि ने गुरुवार को बी.एल.एस वर्षिक तथा कोर्स की विभिन्न सेमेस्टर परीक्षाओं का कार्यक्रम नहीं कर दिया है। बी.एससी होम साइंस (नन एसवीयी) छठे सेमेस्टर की परीक्षाएं 31 मई से 11 जून तक होंगी। परीक्षा का समय सुबह 8.30 बजे से 10 बजे तक रहेगा। बी.ग्रुप साइंटेबल इंडस्ट्रीज दूसरे सेमेस्टर (न्यू व ओल्ड एसवीयी) दूसरे सेमेस्टर की परीक्षाएं 28 मई से 9 जून, छठे सेमेस्टर की परीक्षाएं 27 मई से 14 जून और छठे सेमेस्टर की परीक्षाएं 28 मई से चार जून तक आयोजित की जाएंगी।

i-NEXT PAGE 4

SIP नहीं, Gen-Z को तो भाए फ्लेक्सिबल इन्वेस्टमेंट

लखनऊ यूनिवर्सिटी और भारत लैब ने किया सर्वे, रिपोर्ट हुई जारी

'माय फर्स्ट सैलरी' को लेकर युवाओं ने दिए व्यूज

lucknow@inext.co.in

LUCKNOW (22 May): लखनऊ यूनिवर्सिटी और भारत लैब ने युवाओं और उनकी पहली सैलरी को लेकर एक नया सर्वे किया है. जिसकी रिपोर्ट का विमोचन गुरुवार को यूनिवर्सिटी के वीसी प्रो. आलोक कुमार राय और रेडिफ्यूजन के चेयरमैन संजीव गोयल ने किया. यह रिपोर्ट भारत लैब और एलयू का एक सांस्कृतिक एवं व्यवहारिक थिंक टैंक है. जिसमें यूनिवर्सिटी के एमबीए स्टूडेंट्स और लखनऊ के आसपास के टियर 3 कस्बों के युवाओं को शामिल किया गया है. इस रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत के युवाओं के लिए पहली सैलरी केवल आर्थिक नहीं बल्कि एक भावनात्मक और सांस्कृतिक यात्रा है. यह स्वतंत्रता, पारिवारिक मूल्यों और आत्मसम्मान का प्रतीक है.

जेन-जी का फाइनेंशियल व्यू

यूनिवर्सिटी द्वारा जारी की गई रिपोर्ट के मुताबिक, आज के जेन-जी अब ट्रेडिशनल एसआईपी यानी सिस्टेमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान की जगह पर फ्लेक्सिबल और पर्सनल इन्वेस्टमेंट मॉडल्स को पसंद कर रहे हैं. रिपोर्ट के अनुसार, लगभग 76 पर्सेंट यंगस्टर्स पॉसिबिलिटी के अकॉर्डिंग इन्वेस्टमेंट के सिद्धांत पर चल रहे हैं. ज्यादातर यंगस्टर्स म्यूचुअल फंड्स, स्टॉक मार्केट, ट्रेडिंग में इन्वेस्ट करना चाहते हैं. वहीं दूसरी तरफ, महिलाएं अब भी गोल्ड में इन्वेस्टमेंट सबसे सेफ मानती हैं.

फर्स्ट सैलरी को लेकर युवाओं का रिस्पॉन्स

एलयू की इस रिपोर्ट में युवाओं के फर्स्ट सैलरी को लेकर दिए गए रिस्पॉन्स को भी शामिल किया गया है, जिसमें उन्होंने बताया कि उन्होंने अपनी फर्स्ट सैलरी को कैसे खर्च किया.

1- सैलरी के 38.8 फ्लेटेज से खरीदे गिफ्ट
2- सैलरी का 24.5 फ्लेटेज किया सेव
3- सैलरी का 20.4 फ्लेटेज किया डोनेट
4- 12.2 फ्लेटेज से खरीदे हाउसहोल्ड सामान
5- सैलरी का 4.1 फ्लेटेज दिया पेरेंट्स को

रिसर्च पढ़ाई का अहम हिस्सा

एलयू वीसी प्रो. आलोक कुमार राय ने कहा कि लखनऊ यूनिवर्सिटी में हमारा मानना है कि शोध को राष्ट्र की धड़कनों को प्रतिबिम्बित करना चाहिए. भारत लैब इस सोच का सजीव उदाहरण है. यह रिपोर्ट केवल अर्थशास्त्रियों के लिए नहीं बल्कि माता-पिता, नीति निर्माताओं और हर युवा के लिए है, जो आर्थिक स्वतंत्रता की दहलीज पर खड़ा है.

गोल्ड महिलाओं का दोस्त

इस सर्वे में सामने आए फैक्ट्स के मुताबिक, ज्यादातर महिलाएं गोल्ड खरीदने और गोल्ड में सैलरी के पैसे इन्वेस्ट करने में इंटरेस्टेड थी, जबकि पुरुष शेयर मार्केट और फंड्स में इन्वेस्टमेंट प्लान कर रहे थे.

महिलाओं में आजादी तो पुरुषों में रिस्पॉन्सिबिलिटी

सर्वे के मुताबिक, पहली बार की सैलरी मिलने के बाद ज्यादातर पुरुषों में घर और घरवालों की रिस्पॉन्सिबिलिटी का भाव देखने को मिला, जबकि महिलाओं में फर्स्ट सैलरी उनकी फाइनेंशियल इंडिपेंडेंस का रास्ता है. इस रिपोर्ट में और भी कई अहम जानकारियां सामने आई हैं.

एलयू में पढ़ें बिजनेस एनालिटिक्स

मिशन एडमिशन

60 सीटों पर खोंगे एडमिशन, एंट्रेंस से होगा सेलेक्शन

इतनी हैं सीटें

आईएमएस की डायरेक्टर प्रो. विनीता काचर ने बताया कि बीबीए इन बिजनेस एनालिटिक्स में कुल 60 सीटें हैं, जिसमें एडमिशन एंट्रेंस के बेस पर होता है. पहले स्टूडेंट्स को यूनिवर्सिटी की वेबसाइट से एप्लीकेशन फॉर्म भरना होगा, जिसके बाद एंट्रेंस होगा और फिर मेरिट के बेस पर एडमिशन होता है.

LUCKNOW (22 May): लखनऊ यूनिवर्सिटी के आईएमएस यानी इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज में नए सेशन से बीबीए इन बिजनेस एनालिटिक्स कोर्स की शुरुआत की जा रही है, जिसकी मंजूरी गुरुवार को हुई गवर्निंग बोर्ड की बैठक में दे दी गई. यूनिवर्सिटी के नवीन कैंपस में गवर्निंग बोर्ड की बैठक हुई, जिसकी अध्यक्षता यूनिवर्सिटी के वीसी प्रो. आलोक कुमार राय ने की. इस बैठक में बीबीए कोर्स को मंजूरी देने के साथ ही कई अन्य प्रस्तावों को भी अनुमोदित किया गया. आईएमएस में बीबीए कोर्स में कुल 300 सीटें है, इसमें भी एडमिशन एंट्रेंस से ही होता है.

बीबीए की 300 सीटें

एडमिशन के लिए अप्लीकेशन प्रोसेस जारी है. ज्यादा जानकारी के लिए स्टूडेंट्स यूनिवर्सिटी की ऑफिशियल वेबसाइट पर विजिट कर सकते हैं. यहां पर उन्हें इस कोर्स के बारे में सभी जरूरी जानकारियां हासिल हो जाएंगी.

AMRIT VICHAR PAGE 8

पहली सैलरी लड़कियों के लिए आजादी, तो लड़कों के लिए जिम्मेदारी

भारत लैब ने टियर टू और थ्री शहरों के 2,125 युवाओं पर किया सर्वेक्षण

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: पहली नौकरी और पहली सैलरी किसी को नहीं भूलती हर किसी के जीवन का यह खास पल होता है। 44 प्रतिशत से अधिक युवा ऐसे हैं जो कि पहली सैलरी मिलते ही सबसे पहले इसकी सूचना अपनी मां को देते हैं। ऐसे युवा अपनी जिम्मेदारी महसूस करते हैं और बड़ी संख्या ऐसे युवाओं की है जो दान, मंदिर, पूजापाठ में सैलरी का बड़ा हिस्सा खर्च करते हैं। म्यूचुअल फंड या भविष्य के लिए निवेश में लगाने में भी युवक रुचि लेते हैं। लेकिन इसके उलट लड़कियों की पहली सैलरी उनकी आजादी की घोषणा होती है। 88 प्रतिशत से अधिक महिलाएं ऐसी है जो पहली सैलरी को व्यक्तिगत स्वतंत्रता का प्रतीक मानती हैं। यह खुलासा भारत लैब के व्यापक सर्वेक्षण में सामने आया है।

भारत लैब देश का पहला सांस्कृतिक और व्यवहारिक थिंक टैंक है, जो देश के टियर 2 और टियर 3 क्षेत्रों की सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक वास्तविकताओं को समझने के लिए समर्पित है। यह प्रो. आलोक कुमार राय (कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय) और डॉ. संदीप गोयल (चेयरमैन, रेडिफ्यूजन) के नेतृत्व में प्रबंधन के विशेषज्ञों द्वारा संचालित होता है। भारत लैब ने पहली सैलरी पर अध्ययन जारी किया है जिसमें चौंकाने वाले खुलासे किए गए हैं।

युवाओं के लिए सिर्फ आर्थिक नहीं, भावनात्मक उपलब्धि : माय फर्स्ट सैलरी शीर्षक वाली एक नई रिपोर्ट का विमोचन लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय, रेडिफ्यूजन के चेयरमैन संजीव गोयल, प्रो. पीके सिंह ने किया। यह रिपोर्ट भारत लैब द्वारा तैयार की गई है, जो लखनऊ विश्वविद्यालय और रेडिफ्यूजन का एक संयुक्त सांस्कृतिक, व्यावहारिक थिंक टैंक है। टियर 3 कस्बों के युवाओं पर आधारित इस सर्वेक्षण से साबित हो गया है कि युवाओं के लिए पहली सैलरी केवल आर्थिक नहीं बल्कि एक भावनात्मक और सांस्कृतिक मुद्दा है।

सर्वेक्षण की खास बातें : 38.8 प्रतिशत युवाओं के लिए पहली सैलरी परिवार को उपहार देने के लिए होती है। 24.5 प्रतिशत युवा पहली सैलरी से बचत शुरू करते हैं। 20.4 प्रतिशत दान करने, मंदिर में प्रसाद चढ़ाने में व्यय करते हैं।

88.5 प्रतिशत महिलाओं के लिए पहली सैलरी उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता की घोषणा। 44.6 प्रतिशत युवाओं ने पहली सैलरी की सबसे पहले सूचना मां को दी। 76 प्रतिशत युवा म्यूचुअल फंड में जब संभव हो तब के आधार पर काम करते हैं।

तीन खास निष्कर्ष : फिनटेक कंपनियों को सरल और लक्ष्य-आधारित निवेश विकल्प शुरू करने चाहिए।

नीति-निर्माताओं को छोटे शहरों में न्यूनतम वेतन ढांचे पर पुनर्विचार करना चाहिए। मार्केटिंग रणनीतियों में पारिवारिक और सांस्कृतिक मूल्यों को शामिल करना चाहिए।

महिला छात्रों के लिए वित्तीय साक्षरता को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना चाहिए।

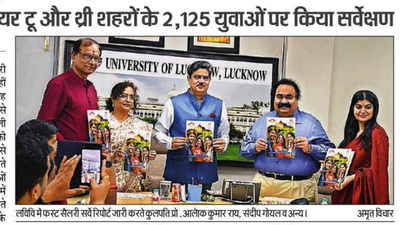

लविवि में फर्स्ट सैलरी सर्वे रिपोर्ट जारी करते कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय, संदीप गोयल व अन्य। अमृत विचार

- माय फर्स्ट सैलरी शीर्षक वाली नई सर्वे रिपोर्ट हुई जारी

युवा बचत करना चाहते हैं, लेकिन बंधन में नहीं रहना चाहते। यह व्यक्त